BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

शब्द पखेरू : साइबर अपराध एवं समाज

डॉ0 शशिकला

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

एस0 एम0 आर0 जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज

साहिया, देहरादून

सारांश– 'शब्द पखेरू' उपन्यास अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार नासिरा शर्मा का प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 2017 में वाणी प्रकाशन द्वारा किया गया है। यह उपन्यास वर्तमान समय के परिवेश, जीवन मूल्यों को पेश करता है, साथ ही एकल परिवार की चुनौतियों व समस्याओं को दर्शाता है। आज विश्व में मनुष्य ने नित्य नए अविष्कारों से जहाँ एक ओर दुनिया की चकाचौंध में इजाफा किया है, आराम तथा सुख सुविधा पूर्ण जीवन की तमन्ना रखने वाले उच्च वर्ग की जिंदगी में सहूलियतों का अम्बार लगा दिया है, वहीं दूसरी ओर एक वर्ग ऐसा भी है, जो निरन्तर संघर्षरत है। वह मशीनी जीवन जीने को मजबूर है। उसके जीवन से प्रेम, संवेदना, आत्मीय रिश्ते गैर जरूरी हो गए हैं और वह सुख साधनों को पाने की दौड़ में शामिल हो अपना वजूद भुलाए बैठा है। ऐसे ही वर्ग से हैं–'सूर्यकांत वर्मा' जो अपने परिवार की समस्याओं को कर्तव्य से दूर करने की लगन में यह बिल्कुल भूल चुके हैं कि प्रेम की भी जीवन में बड़ी भूमिका होती है और जिसकी कमी से उनकी बीमार पत्नी 'साधना' मौत के अंधेरे में गुम होना चाहती है, जबकि उनकी दोनों जवान होती बेटियां 'मनीषा' और 'शैलजा' घुटन से भरे घर के इस नर्क से रोशनी के दायरों को पकड़ने के लिए छटपटाती हैं। मनीषा समझदार है। वह अपनी पढ़ाई पूरी करके आइ.ए. एस. की तैयारी कर रही है। दूसरी ओर उसकी छोटी बहन शैलजा बाजार और तकनीक के इस विकसित हो रहे माहौल में अपना मार्गदर्शक गूगल को समझ लेती है। शैलजा अपना अधिकांश समय इंटरनेट का प्रयोग करने में गुजारती है।

'शब्द पखेरू' नए तेवर, नई भाषा–शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है, जो नई पीढ़ी के गहरे दुःखों व जद्दोजहद से हमारा परिचय कराता है। नासिरा शर्मा का यह उपन्यास आगाह कराता है कि कैसे नई पीढ़ी अनजाने में ही साइबर क्राइम का हिस्सा बन जाती है।

लेखक परिचय– साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित सन् 1948 में इलाहाबाद, वर्तमान प्रयागराज में जन्मी नासिरा शर्मा विश्व विख्यात साहित्यकार हैं। हिन्दी के अलावा उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और पश्तो भाषा पर भी उनकी गहरी पकड़ है। उनके द्वारा किए गए ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान सीरिया तथा राजनीतिज्ञों तथा प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ साक्षात्कार बहुचर्चित हुए। स्वतंत्र पत्रकारिता में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तकरीबन एक दर्जन से अधिक उपन्यास एवं कहानी संग्रह के अलावा उन्होंने काव्य की रचना भी की है।

प्रस्तावना– विश्व में औद्योगिक क्रांति के पश्चात् एक बड़ी क्रांति के रूप में जो आविर्भाव हुआ, वह है– सूचना प्रौद्योगिकी। इंटरनेट आज प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकता बन गया है। चाहे शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन व संचार हो या फिर अनुसंधान का क्षेत्र। इसके माध्यम से बहुत ही कम समय में सूचना तेजी से भेजी जा सकती है। चैटिंग द्वारा दुनिया के किसी भी कोने में दूसरे व्यक्ति से आसानी से बात कर सकते हैं। सिक्के के दो पहलू के समान ही प्रत्येक प्रौद्योगिकी के भी दो रूप होते है– उपयोग तथा दुरूपयोग। यद्यपि इंटरनेट को युद्ध काल में परमाणु हमले से सुरक्षा के लिए संचार हेतु बनाया गया था, किन्तु आज वही युद्ध का माध्यम भी बनता जा रहा है। संघर्ष प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में हर क्षेत्र में देखा जा सकता है और अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए हम जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं का सामना करने हेतु संघर्षरत रहते हैं। इसी प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में उसके अवयवों को हमें और अधिक सक्षम बनाना होगा, ताकि उनका दुरूपयोग न होने

@2025 Bihar Shodh Samaagam

पाए। हमें उनको हैकिंग तथा वायरस से बचाने के लिए सावधानी बरतनी होगी। फर्जी एप व वेबसाइट्स के माध्यम से डाटा चोरी होने की खबरें आए दिन सुनाई देती हैं। इंटरनेट मनुष्य के लिए आज जितना उपयोगी बन चुका है, इसके नुकसान भी उतने ही भयावह हैं, सावधानी व सुरक्षा के साथ इसका प्रयोग किया जाए तो इसके खतरों से बचा जा सकता है। इसने मानव ज्ञान की सीमाओं को असीमित कर दिया है क्योंकि यह बहुत कम समय और कम खर्च में जानकारी उपलब्ध कराने में समर्थ है। समकालीन डिजिटल युग में साइबर अपराध की बढ़ती व्यापकता और सामाजिक प्रभाव एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है, प्रौद्योगिकी के हमारे जीवन में तेजी से एकीकृत होने के साथ अपराध नए रूप में सामने आए हैं, जो व्यक्तियों, समुदायों और समाजों के लिए अभूतपूर्व चुनौतियां पेश करते हैं। इस परिदृश्य में साहित्यिक कृतियाँ इन जटिल सामाजिक मुद्दों को समझने और उन पर विचार करने के लिए एक अनूठा लेंस प्रदान करती हैं। हिन्दी उपन्यास 'शब्द पखेरू' एक ऐसी कृति के रूप में उभरता है, जो इन समकालीन सामाजिक मुद्दों से जोड़ता है। विशेष रूप से साइबर अपराध पर ध्यान केंद्रित करता है। किसी इंसान की तरह शब्दों का भी अपना एक भरा–पूरा व्यक्तित्व होता है, शब्दों में इतनी ताकत होती है कि उन्हें लिखने वाला बिना अपने पाठक से मिले भी उन्हें प्रभावित कर सकता है। खास तौर से आज इंटरनेट के समय में तो शब्दों के माध्यम से पूरी दुनिया बिना मिले ही एक दूसरे से जुड़ रही है और एक दूसरे को प्रभावित कर रही है। घर में संवादहीनता और दूर बैठे लोगों का शब्दों के माध्यम से जुड़ना आज के दौर का खास चलन है। 'शब्द पखेरू' उपन्यास इस मौजूदा चलन की कथा काफी ईमानदारी से कहने में सफल प्रतीत होता है।

विस्तारण–'शब्द पखेरू' उपन्यास मध्यमवर्गीय परिवार की घुटन, पीढ़ियों के अंतराल, संवादहीनता और सीमित संसाधनों के साथ बड़े सपनों को पूरा करने की जद्दोजहद में लगे बच्चों की कथा को बड़ी बारीकी से बयां करता है। सूर्यकांत और बेटियों में पीढ़ियों का फासला है लेकिन वह उन फासलों को पाटने के लिए दिनचर्या में कई बदलाव करता है। पिता और पुत्रियों के आपसी संवाद से इस बदलाव को देखा जा सकता है–

–''नूडल्स!''

शैलजा खुशी से चीखी– "पापा मुझे यकीन नहीं आ रहा है कि आपने खाना ऑर्डर किया है।

"ऑर्डर नहीं, मैंने स्वंय तैयार किया है, इंटरनेट से रेसिपी लेकर।" सूर्यकांत हंसे।

"कैसे मुमकिन है? बाहर के खाने पर रोक लगाने वाला.....मनीषा ने आगे बढ़ते हुए अविश्वास से कहा।

'मुझ पर न सही इंटरनेट पर तो यकीन कर सकती हो ना! सूर्यकांत ने कोक की बोतल खोल गिलास भरे।

'वाह पापा आप तो आज दूसरे.....आई मीन व्हाट अ नाइस चेंज? शैलजा ने दूसरी बार प्लेट भरते हुए कहा।

दोनों बेटियों को खुशी से चहकते हुए देख सूर्यकांत सोचने लगे– ''पिछले दो वर्षों में आज की दोपहर यादगार बनकर रह गयी या फिर एक नए जीवन की शुरूआत, जिसे हम बदलाव का नाम भी दे सकते है या फिर भविष्य की तरफ बढ़ने का संकेत। जीवन समय के फिसलने का नाम है शायद!"

उपन्यास 'शब्द पखेरू' दिल्ली में रहने वाले एक मध्यमवर्गीय परिवार के जीवन संघर्ष पर आधारित है। परिवार के एकमात्र पुरूष पात्र सूर्यकांत हैं, जो कि कंपनी में अच्छे पद पर कार्यरत हैं। पत्नी साधना स्कूल में शिक्षिका हैं। उनकी दो बेटियाँ हैं– मनीषा और शैलजा। सूर्यकांत को कंपनी की ओर से घर मिला है। छोटा सा परिवार जो अपनी दुनिया में खुश है, किंतु साधना के अचानक बीमार पड़ जाने से पूरा घर बिखर जाता है। सूर्यकांत के कंधों पर बीमार पत्नी तथा छोटे बच्चों की जिम्मेदारियां आन पड़ती हैं। उनको कंपनी से छुट्टी लेनी पड़ती है। पत्नी की देखभाल के लिए वह अपने रिश्तेदारों की मदद लेता है। वह घर के कामों के लिए नौकर रखता है। उसे कंपनी का घर छोड़ किराए का घर लेना पड़ता है और अपनी कार भी बेचनी पड़ती है। घर के खर्चो को पूरा करने के लिए वे गांव का घर और जमीन बेचने का फैसला लेते हैं। साधना के स्वास्थ्य में कोई सुधार

न होने से वह नौकरी छोड़ने का फैसला लेता है किन्तु कंपनी के एक उच्च अधिकारी की बातों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वह अपनी दोनों बेटियों को बीमार माँ और घर की जिम्मेदारियाँ सौप कर कंपनी के प्रोजेक्ट पर काम करने दूसरे शहर जाने का फैसला कर लेते हैं। मनीषा और शैलजा दोनों बखूबी अपनी जिम्मेदारियाँ निभाती हैं। उनकी देखभाल से उनकी माँ साधना की सेहत में काफी सुधार आ जाता है। मनीषा आइ.ए.एस परीक्षा की तैयारी करती है और शैलजा का सपना है– विदेश जाकर अपनी पढ़ाई पूरी करना। वह गूगल को ग्रैंडपा कहती है और उसके जरिए वह बेहतर दुनिया में सांस लेने की तमन्ना पाल लेती है। अपने परिवार को सुखमय जीवन देने की इच्छा में वह साइबर क्राइम में फंस जाती है। फेसबुक पर बने एक उम्रदराज दोस्त की टाइम पास दोस्ती शैलजा को साइबर क्राइम के मुहाने तक ले जाती है, जैसा कि उपन्यास के इस अंश में दर्शाया गया है।

उस स्थिति का वर्णन करते हुए नासिरा शर्मा लिखती हैं– "मैं मिस्टर जॉन हूँ, मुझे मुंबई एयरपोर्ट पर रोक लिया गया है, मेरा सारा सामान छीन लिया गया है, प्लीज कम एंड हेल्प मी"।

"मुंबई ? आप तो दिल्ली से आने वाले थे!"

"मेरे एजेंट ने मुझे मुंबई का टिकट दे दिया।"

''मगर मैं दिल्ली में हूँ, आपकी कोई मदद नहीं कर पाऊँगी।''

चकरायी सी शैलजा बोली।

फोन बंद हो गया, फिर घण्टी बजी, "प्लीज कम माई लव!

''पाउंड्स और डॉलर से भरी मेरी दो अटैचियाँ उन्होंने अपने कब्जे में ले ली हैं और कहते हैं कि बीस हजार देने पर छोड़ देंगे। प्लीज कम विद मनी हनी!''

सुनकर उसे हँसी आ गई, मगर दूसरे पल वह चौंक पड़ी, डॉलर से भरी अटैचियां, मुबई एयरपोर्ट, स्मगलर! सोचकर शैलजा घबरा उठी। उसने माथे पर आया पसीना पोंछा.....

शैलजा को लगा उसकी आंतें पेट से बाहर निकल आएंगी। वह साइबर क्राइम में फंस चुकी थी, अगर वह पकड़ी गई तो.....

.....

स्वयं को अमेरिकन पीस आर्मी ऑफिसर बताकर वह व्यक्ति शैलजा को अपने प्यार के जाल में फँसा लेता है। शैलजा उसकी बातों में आकर उससे विवाह करने को तैयार हो जाती है और उसकी बताई जगह पर उसके द्वारा भेजे गए समान और पैसे लेने जाना चाहती है। इस काम में मदद के लिए जब वह अपनी सहेली के चाचा से मदद लेने उनके ऑफिस पहुँचती है, तब उसको स्वंय के साइबर अपराध में फंस जाने की बात मालूम पड़ती है। इससे पहले कि वह साइबर क्राइम के किसी बड़े नेशनल या इंटरनेशनल गैंग के जाल में फँसकर अपने परिवार को नुकसान पहुँचाती, उसकी सहेली सादिया और उसके चाचा उसे बचा लेते हैं।

उद्देश्य–प्रस्तुत शोध पत्र का व्यापक उद्देश्य 'शब्द पखेरू' उपन्यास में साइबर अपराध के चित्रण का विश्लेषण करना और उपन्यास के आख्यान के भीतर प्रौद्योगिकी, समाज और व्यक्तिगत कमजोरी के बीच संबध को समझने के लिए इसके निहितार्थ की जाँच करना है। यह शोधपत्र अकादमिक और सामाजिक रूप से प्रासंगिक है, जो समाज और साहित्य की अंतः विषयक प्रकृति पर जोर देता है और साइबर अपराध के सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों को समझने में संभावित योगदान देता है। उपन्यास का उद्देश्य उपन्यास में चित्रित साइबर अपराध से आगाह करना और समकालीन भारत के संदर्भ में उसकी सटीकता और प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है।

शोध पद्धति–उपन्यास का गहन पठन एवं विषयगत विश्लेषण।

निष्कर्ष– यह उपन्यास साइबर अपराध की बढ़ती घटनाओं के प्रति सजग करता है। साइबर अपराधी किस प्रकार इंटरनेट के जरिए मासूम लोगों को इस्तेमाल कर अपना काम निकलवा लेते हैं और उन्हें अपराध की दुनिया में पहुंचा देते हैं, जैसा कि उपन्यास में होता है। परिवार में आपसी संवाद की कमी, सोच व विचारों की भिन्नता के बीच सीमित संसाधनों के साथ किस प्रकार एक मध्यमवर्गीय परिवार दिल्ली जैसे महंगे शहर में जीवन यापन कर रहा है, यहां इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने दर्शाने का प्रयास किया है। 'शब्द पखेरू' उपन्यास वर्तमान युवा पीढ़ी को इंटरनेट पर अधिक सक्रिय न रहने और साइबर अपराध में फंसने की आशंका के प्रति आगाह करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1– 'शब्द पखेरू' – शर्मा, नासिरा
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण– 2017,

2– 'शब्द पखेरू' – शर्मा, नासिरा
पृष्ठ संख्या –17
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण– 2017,
पृष्ठ संख्या –76

3– 'आज का युग इंटरनेट का युग' – सिंघल, विनीता
इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण–2004
पृष्ठ संख्या–3,4

4– 'आज का युग इंटरनेट का युग' – सिंघल, विनीता
इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण–2004
पृष्ठ संख्या–99